Toppersnotes
Unleash the topper in you

# ग्राम विकास अधिकारी
# (VDO)
# मुख्य परीक्षा

## राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग - 1

## राजस्थान का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

# VDO - MAINS


| क्र.सं. | अध्याय | पृष्ट सं. |
|---|---|---|
| | **राजस्थान का भूगोल** | |
| 1. | राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल | 1 |
| 2. | राजस्थान का भौतिक प्रदेश एवं विभाग | 7 |
| 3. | राजस्थान का अपवाह तंत्र | 19 |
| 4. | राजस्थान की झीलें | 27 |
| 5. | राजस्थान की जलवायु | 31 |
| 6. | राजस्थान में मृदा संसाधन | 38 |
| 7. | राजस्थान में वन–संसाधन एवं वनस्पति | 42 |
| 8. | राजस्थान में खनिज सम्पदा | 47 |
| 9. | राजस्थान में ऊर्जा स्त्रोत | 56 |
| 10. | राजस्थान में पशुधन | 65 |
| 11. | राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ | 69 |
| 12. | राजस्थान की जनसंख्या | 78 |
| 13. | राजस्थान में वन्यजीव एवं इनका संरक्षण | 88 |
| 14. | राजस्थान में उद्योग | 92 |
| | राजस्थान में पर्यटन विकास | 101 |
| 15. | राजस्थान में सूखा, अकाल व मरुस्थलीकरण | 103 |
| 16. | गरीबी एवं बेरोजगारी | 105 |
| | **राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति** | |
| 1. | प्राचीन राजस्थान का इतिहास | 110 |
| | • परिचय | 110 |
| | • प्राचीन सभ्याताएँ | 112 |
| | • महाजनपद काल | 117 |
| | • मौर्यकाल | 118 |

- मौर्योत्तर काल 118
- गुप्तकाल 119
- गुप्तोत्तर काल 119

2. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 120
   - प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ
   - राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ

3. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 161
   - 1857 की कांति 161
   - प्रमुख किसान आन्दोलन 164
   - प्रमुख जनजातीय आन्दोलन 167
   - प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन 168
   - राजस्थान का एकीकरण 173

4. राजस्थान कला एवं संस्कृति 177
   - राजस्थान के त्यौहार 177
   - राजस्थान के लोक देवता 183
   - राजस्थान की लोक देवियाँ 188
   - राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय 192
   - राजस्थान के लोकगीत 198
   - राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ 199
   - राजस्थान के संगीत 200
   - राजस्थान के लोक नृत्य 201
   - राजस्थान के लोकनाट्य 205
   - राजस्थान की जनजातियाँ 207
   - राजस्थान की चित्रकला 212
   - राजस्थान की हस्तकलाएँ 216
   - राजस्थान का साहित्य 220
   - राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ 226

| | | |
|---|---|---|
| 5. | राजस्थान की स्थापत्य कला | 228 |
| | • किले एवं स्मारक | 228 |
| | • राजस्थान के धार्मिक स्थल | 238 |
| | • राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज | 242 |
| | • राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व | 244 |
| | • वेश–भूषा व आभूषण | 249 |
| | • राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र | 252 |
| 6. | पंचायती राज | 257 |

# राजस्थान में वन्य जीव इनका संरक्षण

वर्तमान में भारत में सर्वप्रथम वन्य जीवों हेतु संहिताबद्ध कानून 1881 में "वन्य पक्षी सुरक्षा अधिनियम" बनाया गया ।

1972 में भारत सरकार द्वारा "वन्यजीव सुरक्षा अधिनियम पारित किया गया जिसे 1973 में राजस्थान में लागू किया गया । इससे वन्यजीवों के शिकार पर पूर्णतया प्रतिबंध लग गया ।

42 वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा "वन्यजीव विषय को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची में रख दिया गया ।

समय के साथ-साथ वन्यजीव संरक्षण हेतु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा कई प्रयास किये गये है जो अधोकिंत है:-

- जैवमण्डल क्षेत्र
- राष्ट्रीय उद्यान
- अभयारण्य
- मृगवन
- शिकार/आखेट निषेध क्षेत्र
- उद्यान
- जन्तुआलय

## राष्ट्रीय उद्यान (National Park)

केन्द्र सरकार के द्वारा विभिन्न जीव जन्तुओं एवं पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिये घोषित स्थल राष्ट्रीय उद्यान कहलाते है । राजस्थान में वर्तमान में 3 राष्ट्रीय उद्यान है:-

1. रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान- सवाईमाधोपुर
2. घना पक्षी विहार- भरतपुर
3. मुकुन्दरा हिल्स - कोटा-बूँदी-चित्तौगढ

## अभ्यारण्य (Sanctuary)

राज्य सरकार द्वारा घोषित वह क्षेत्र जहाँ वन्य जीव जन्तु बिना किसी भय के मुक्त विचरण कर सकते है । उसे अभ्यारण्य कहा जाता है । वर्तमान में राजस्थान में इनकी संख्या-26 है ।

## राजस्थान में मृगवन

वर्तमान में राजस्थान में 07 मृगवन है निम्नांकित है:-

1. अशोक विहार जयपुर
2. माचिया सफारी मृगवन, का पलाना झील जोधपुर
3. सज्जनगढ मृग वन उदयपुर
4. चित्तौडगढ मृग वन चित्तौडगढ
5. अमृता देवी मृग वन, खेजडली
6. राजंय मृग वन उद्यान शाहपुरा जयपुर
7. पुष्कर मृग वन, पंचकुण्ड अजमेर

## राजस्थान के जन्तुआलय

भारत में सर्वप्रथम 1855 में मद्रास में जन्तुआलय स्थापित किया गया ।

राजस्थान में वर्तमान में 05 जन्तुआलय है । भरतपुर व अजमेर संभागो के अलावा सभी संभागों पर जन्तुआलय है

1. उदयपुर, 2. बीकानेर, 3. जोधपुर(माचिया सफारी), 4. कोटा 5. जयपुर (नाहरगढ)

## राष्ट्रीय उद्यान

### 1. रणथम्भौर/राजीव गांधी राष्ट्रीय उद्यान सवाई माधोपुर - अभ्यारण्य दर्जा - 1955

- यह राजस्थान का पहला राष्ट्रीय उद्यान है । उसे 1980 में केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया
- इसके उपनाम:-बाघ भूमि भारतीय बाघों का घर लैण्ड ऑफ टाईगर (क्योंकि यहाँ सर्वाधिक बाघ पाये जाते है और बाघ परियोजना में शामिल होने वाला यह राज्य का प्रथम अभ्यारण्य था । इसे 1973-74 में बाघ परियोजना में शामिल किया गया था ।
- यह 392 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है और राष्ट्र की सबसे छोटी बाघ परियोजना है । (राष्ट्रीय उद्यान - 167 वर्ग गज)
- यहाँ 1996-97 से "Indian Development Project" चलाया जा रहा है जिसे world Bank और वैश्विक पर्यावरण सुविधा की सहायता मिल रही है ।
- यहाँ बरगद के वृक्षो की बहुलता है और प्रमुख आकर्षण मगरमच्छ है ।
- यहाँ पीली घाटी जोगी महल, पदम तालाब, मलिक तालाब, राजबाग तालाब, गिलाई सागर, मानसरोवर तथा लाहपुर तालाब प्रसिद्ध है ।

  विशेष:- त्रिनेत्र गणेश, कुक्कर घाटी, जोगी महल

## 2. केवलादेव या घना पक्षी विहार राष्ट्रीय उद्यान–भरतपुर

- यह भरतपुर जिले में 29 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।
- इसे पक्षियों का स्वर्ग भी कहा जाता है ।
- प्रख्यात पक्षी विशेषज्ञ डॉ. सलीम अली के प्रयासो से इसे 1981 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया ।
- सर मार्टिन इवांस ने "भरतपुर बडे पैराडाइज" नामक पुस्तक भी इस पर लिखी ।
- यह एशिया की सबसे बडी पक्षी प्रजनन स्थली है ।
- 1985 में यूनेस्को ने इसे "विश्व प्राकृतिक धरोहर" में शामिल किया एवं 2004 में इसे "विश्व धरोहर जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रम में शामिल किया ।
- यहाँ पक्षियों की लगभग 400 प्रजातियाँ है जिनमें कॉमन क्रेन सफेद साइबेरियन क्रेन आदि प्रसिद्ध है । इस उद्यान को अजान बांध से पानी प्राप्त होता है ।
- यह दिल्ली–आगरा–जयपुर के गोल्डन ट्राइंगल पर स्थित है जिसके कारण यहाँ पर्यटको की तादाद अधिक रहती है ।
- यहाँ केवलादेव नामक शिव भगवान का एक छोटा सा मंदिर है ।
- इसे नमभूमि/वेटलेण्ड स्थल घोषित किया गया है ।

### विशेष

- डॉ. सालिम अली की कार्यस्थली
- साईबेरियन सारस
- राज्य का एकमात्र पक्षियों का संरक्षण स्थल
- रामसर साईट में शामिल राजस्थान का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान

## 3. मुकुन्दरा हिल्स/दर्रा राष्ट्रीय उद्यान

- यह कोटा, झालावाड और चित्तौगढ जिलो के लगभग 300 वर्गकिमी में अवस्थित है । इसे 9 जनवरी 2012 में राष्ट्रीय घोषित किया गया है ।
- राजस्थान में सर्वाधिक पशु इसी उद्यान में है । यह गागरोनी तोते (हीरामन तोते) घडियाल, सारस आदि हेतु प्रसिद्ध है ।
- यहाँ अबाली मीणी का महल, गुप्तकालीन भीम चंवरी और हूणो द्वारा बनाया गया बाडोली का शिव मंदिर है ।
- यहाँ चम्बल, कालीसिंध, आहू एवं अमझर नदियाँ प्रवाहित होती है ।
- यह राज्य का तीसरा टाईगर रिजर्व है ।
- 2003 – राजीव गाँधी अभयारण्य
- 2006 – मुकन्दरा हिल्स अभयारण्य
- बाघ परियोजना – 2013 में ।
- एक मात्र अभयारण्य जो अरावली श्रृंखला में नहीं आता ।

### अन्य वन्यजीव अभ्यारण्य

1. राष्ट्रीय मरू उद्यानः– स्थापना– 1980, जैसलमेर, बाडमेर सबसे बडा अभ्यारण्य (3162 वर्ग किमी.)
2. तालछापर वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1971, चुरू, कृष्ण मृग, मोथिया घास, लाना झाडी व कुरंजा पक्षी आते है ।
3. जमवारामगढ वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1982, जयपुर, उपनाम – जयपुर का पुराना शिकारगाह
4. नाहरगढ वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1980, जयपुर, बॉयोलोजिकल पार्क स्थापित किया गया ।
5. सरिस्का वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1955, अलवर, बाघों का घर, क्षेत्रफल – 452 किमी.
6. बंध बारेठा वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1985, भरतपुर, जरख पाए जाते है ।
7. रामसागर वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1955, धौलपुर
8. वन विहार वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1955, धौलपुर
9. केसरबाग वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1955, धौलपुर
10. कैलादेवी वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1983, करौली एवं सवाई माधोपुर, इसे डांगलैण्ड भी कहते है ।
11. राष्ट्रीय चम्बल घडियाल अभ्यारण्यः– स्थापना– 1978, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, बूंदी एवं कोटा । तीन राज्यों में विस्तृत उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान

### अभ्यारण्य

क्षेत्रफल – 5400 किमी.$^2$

उपनाम – जलीय पक्षियों की प्रजनन स्थली, घडीयालों का संसार एकमात्र नदी अभ्यारण्य

इसमें गागेरुप, डॉल्फिन (शिशुमार मछली) पायी जाती है ।

1. सवाईमान सिंह वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1984, सवाईमाधोपुर
2. रामगढ विषधारी वन्य जीव अभ्यारण्यः– स्थापना– 1982, बूंदी, अजगर शरण स्थली

## नवीनतम टाइगर रिर्जव

1. जवाहर सागर वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1975, बूंदी, कोटा, चित्तौडगढ
2. मुकुन्दरा हिल्स(दर्जा वन्य जीव) अभ्यारण्यः- स्थापना- 1955, कोटा, बूंदी, झालावाड
3. शेरगढ वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1981, बांरा
4. कुम्भलगढ वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1971, उदयपुर, पाली एवं राजसमंद
   क्षेत्रफल - 609 किमी.$^2$
   उपनाम - लोमडी व भेडियों की प्रजनन स्थली
   एण्टीलोप - चौसिंगा हिरण पाये जाते है ।
   नवीनतम टाइगर रिजर्व
5. सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1979, चित्तौडगढ, प्रतापगढ एवं उदयपुर
   क्षेत्रफल - 422 किमी.$^2$
   उपनाम - चितल की मातृभूमि, उडन गिलहरी का स्वर्ग यहां सुन्दर छिपकली यूब्लेफरिस पायी जाती है ।
6. भैसरोडगढ वन्य जीव अभ्यारण्य :- स्थापना- 1983, चित्तौडगढ, घडियालों की पंसद
7. बस्सी वन्य जीव अभयरण्यः- स्थापना- 1988., चित्तौडगढ, चितल की चहल-पहल
8. फुलवारी की नालः- स्थापना- 1983, कोटडा (उदयपुर) 492 वर्ग किमी.
9. जयसमन्द वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1955, उदयपुर
10. सज्जनगढ वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1987, उदयपुर
11. टॉडगढ रावली वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1983, अजमेर, पाली एवं राजसमंद
    क्षेत्रफल - 495 किमी.$^2$
    तीन संभागों में फैला हुआ एकमात्र अभ्यारण्य है ।
12. माउण्ट आबू वन्य जीव अभ्यारण्यः- स्थापना- 1960, सिरोही
    सबसे ऊँचाई पर स्थित
    जंगली मुर्गे पाए जाते है ।
13. सरिस्का (अ) अभ्यारण्यः- स्थापना- अप्रैल 2013, अलवर
    राजस्थान का सबसे छोटा अभ्यारण्य (3 वर्ग किमी)

प्रत्येक अभ्यारण्य में ये लिख सकते है कि यह स्थानीय/देशी/विदेशी पर्यटन के लिये प्रसिद्ध है ।

| बाघ परियोजना | | | |
|---|---|---|---|
| रणथम्भौर | सरिस्का | मुकुंदर्रा हिल्स | कुम्भलगढ |
| स्था. 1974 | स्था. 1978 | स्था. 2013 | हाल ही में राज्य सरकार ने इसे टाईगर रिजर्व क्षेत्र बनाने की घोषणा की है । |
| सवाई माधोपुर | अलवर | कोटा, बूँदी, झालावाड, चित्तौड | |

रामसर साइट/आर्द्र भूमि/नम भूमि :-

- वे आर्द्र भूमि जहां विशेष जीव एवं पक्षियों को संरक्षण मिलता है ।
- राजस्थान में वर्तमान में 2 रामसर साईट है ।-
  (1) केवलादेव (2) सांभर
- दो रामसर साईट प्रस्तावित है-
  (1) मानसागर- जयपुर (2) चम्बल

## गोडावण

- 1980 में गोडावण पर प्रथम अन्तराष्टीय सम्मेलन का आयोजन जयपुर में किया गया जिसकी सिफारिशों के आधार पर 1981 में राज्य सरकार ने इसे "राज्य पक्षी" घोषित किया
- उपनामः- गुजंन सोहन चिडिया, गुथना, दुकना, गुधनमेर, घोघाड, और हाडौती क्षेत्र में इसे मालमोरडी कहते है।
- वैज्ञानिक नाम :- Ardeotis Nigriceps
- अंग्रेजी नाम :- Great Indian Bustard
- राजस्थान में गोडावण के लिये 04 स्थान प्रसिद्ध है ।
- राष्ट्रीय मरू उद्यान-जैसलमेर
- सोरसन उद्यान- बारा
- सांकलिया उद्यान-अजमेर
- रामदेवरा उद्यान- जैसलमेर
- जोधपुर में गोडावन का कृत्रिम प्रजनन केन्द्र खोला जा रहा है ।

## चिंकारा :- (गजेला-गजेला)

- इसे 1981 में राज्य पशु घोषित किया गया ।
- इसके उपनाम-छोटा हिरण(एन्टीलोप)
- वास्य क्षेत्रः- तालछापर(चूरू), सीतामाता (प्रतापगढ)

- राजस्थान में एण्टीलोप प्रजाति का चिंकारा पाया जाता है।
  नोट :- चिंकारा एक तत् वाद्य भी है।

## रोहिडा (टेकोमेला अण्डूलेटा)

- इसे 1983 में राज्य वृक्ष घोषित किया गया
- उपनामः- रेगिस्तान का सागवान, मरू सोना
- रोहिडा के फूल मारवाड के टीक कहलाते है।
- इसकी लकडी से फर्नीचर बनते है। इसकी लकडी भारी एवं मजबूत होती है तथा दीमक नही लगती है।
- यह मुख्यतयाः पश्चिमी राजस्थान में पाये जाते है।

## बूर

यह मुख्यतयाः बीकानेर जिले में पायी जाती है और इससे सुगन्धित तेल की प्राप्ति होती है।

## डाब

यह लगभग सम्पूर्ण राजस्थान में पायी जाती है। विवाह धार्मिक अवसरों एवं ग्रहण पर इसका प्रयोग होता है।

## गागरोनी तोता

- इसका वैज्ञानिक नाम 'एलेक्जेन्ड्रिया पेराकीट' है
- इसे हिरामन तोता भी कहा जाता है।
- यह मुकुन्दर्रा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान में सर्वाधिक पाया जाता है
- यह मानव आवाज की हूबहू नकल करने वाला पक्षी माना जाता है।

नोट :- कैलाश सांखला

- प्रसिद्ध वन्य जीव प्रेमी जिनका जन्म जोधपुर में हुआ। बाघो के संरक्षण के प्रयास के कारण इन्हे टाइगर मैन ऑफ इंडिया के नाम जाना जाता है।
- 1972 में इन्हे पद्मश्री व 2013 में राजस्थान रत्न से सम्मानित किया गया।
- इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ (Books) द टाइगर और द रिटर्न ऑफ टाइगर है।

## कन्जेंवेशन रिजर्व

| कन्जेंवेशन रिजर्व | स्थान |
|---|---|
| 1. जोहडबीड कन्जेंवेशन रिजर्व | बीकानेर |
| 2. जवाई बॉध कन्जेंवेशन रिजर्व | पाली |
| 3. बीड कन्जेंवेशन रिजर्व | झुंझुनूँ |
| 4. बॉसियाल कन्जेंवेशन रिजर्व | खेतडी-झुंझुनूँ |
| 5. बिसलपुर कन्जेंवेशन रिजर्व | टोंक |
| 6. सुंधामाता कन्जेंवेशन रिजर्व | जालौर-सिरोही |
| 7. शाकम्भरी कन्जेंवेशन रिजर्व | सीकर-झुंझुनू |
| 8. गोगेलाव कन्जेंवेशन रिजर्व | नागौर |
| 9. गुढा विश्नोई कन्जेंवेशन रिजर्व | जोधपुर |
| 10 रोटू कन्जेंवेशन रिजर्व | नागौर |
| 11. उम्मेदगंज पक्षी कन्जेंवेशन रिजर्व | कोटा |
| 12. झुँझुनू बीड व खेतडी बांसियाल (तेन्दूवें) - झुँझुनू | |
| 13. बीसलपुर - टोंक | |
| 14. कोटा - उम्मेदगंज क्षेत्र | |
| 15. मनसा माता रिजर्व - झुँझुनू | |
| 16. जवाई लेपर्ड रिजर्व - पाली | |
| 17. बांसियाल, खेतडी रिजर्व - झुँझुनू | |
| 18. शाहबाद वन क्षेत्र - बांरा (2021) | |
| 19. रणथंभार कन्जर्वेशन रिजर्व - जालौर | |

- इसे 25 अप्रेल 2022 को घोषित किया गया
- यह जंगली गधों के लिए प्रसिद्ध है।

## राजस्थान के जिलों हेतु निर्धारित वन्यजीव शुभंकर

| क्र सं. | जिला | शुभंकर |
|---|---|---|
| 1. | अलवर | सांभर |
| 2. | अजमेर | खरमोर पक्षी |
| 3. | बाडमेर | मरूलोमडी / लाँकी |
| 4. | बारां | मगरमच्छ |
| 5. | भीलवाडा | मोर |
| 6. | बांसवाडा | जल पीपी |
| 7. | भरतपुर | सारस (क्रेन) |
| 8. | बीकानेर | भट्टीतर (रेत का तीतर) |
| 9. | बूंदी | सुखांव |
| 10. | चुरू | कृष्ण मृग |
| 11. | दौसा | खरगोश |
| 12. | धौलपुर | पचीरा (इण्डियन स्कीमर) |
| 13. | चित्तौडगढ | चौसिंगा |
| 14. | डूंगरपुर | जांघिल, घोंक |
| 15. | जालौर | भालू |
| 16. | जैसलमेर | गोडावन |
| 17. | जोधपुर | कुरंजा |
| 18. | जयपुर | चीतल |
| 19. | झुन्झुनू | काला तीतर |
| 20. | झालावाड | गागरोनी तोता/हिरामण |
| 21. | हनुमानगढ | छोटा किलकिला |

| | | |
|---|---|---|
| 22. | करौली | घड़ियाल |
| 23. | कोटा | उद बिलाव |
| 24. | नागौर | राजहंस |
| 25. | पाली | तेंदुआ |
| 26. | प्रतापगढ | उडन गिलहरी |
| 27. | राजसमंद | भेड़िया |
| 28. | सवाईमाधोपुर | बाघ |
| 29. | गंगानगर | चिंकारा |
| 30. | सीकर | शाहीन |
| 31. | सिरोही | जंगली मुर्गी |
| 32. | टोंक | हंस |
| 33. | उदयपुर | कब बिडजू |

## राजस्थान में उद्योग

**उद्योगों का वर्गीकरण –** उद्योगों का वर्गीकरण भिन्न – भिन्न प्रकार से किया गया हैं –

**1. उपयोग आधारित वर्गीकरण –**

इसके आधार पर चार श्रेणियों में बाँटा गया हैं –

(1) आधारभूत वस्तु उद्योग – इस्पात, उर्वरक, विद्युत।

(2) पूँजीगत वस्तु उद्योग – मशीनरी, परिवहन का माल।

(3) मध्यवर्ती वस्तुओं के उद्योग – कॉटन, यार्न, रंग, टायर – ट्यूब।

(4) उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योग – टेलीविजन, स्कूटर, प्लास्टिक, वनस्पति, चीनी, दवाएँ, माचिस, सिगरेट।

**2. कच्चे माल पर आधारित वर्गीकरण –**

इसके आधार पर उद्योगों की निम्न श्रेणियॉ हैं –

(1) कृषि पर आधारित उद्योग – सूती वस्त्र, चीनी, वनस्पति।

(2) वनों पर आधारित उद्योग – कागज, टिम्बर, उद्योग।

(3) पशु आधारित उद्योग – चमड़ा, जूते, ताँबा, सीसा, जस्ता, सीमेंट।

(4) खनिज आधारित उद्योग – इस्पात, ताँबा, सीसा, जस्ता, सीमेंट।

**3. इन्जीनियरिंग उद्योग**

**4. पूँजी निवेष के आधार पर वर्गीकरण –**

(1) निजी उद्योग

(2) राजकीय उद्योग

**5. सामान्य वर्गीकरण –**

- इसके आधार पर उद्योगों की निम्न श्रेणिया हैं –

(1) वहद् उद्योग

(2) लघु उद्योग

(3) कुटीर उद्योग

राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से पिछडा हुआ राज्य रहा है। इस पिछडेपन का प्रमुख कारण प्राकृतिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण उत्तरदायी रहे हे। आजादी के बाद औद्योगिक विकास का एक नई दिशा दी गई। जिसके अपेक्षित परिणाम दृष्टिगोचर होते है। राज्य में औद्योगिक पिछडेपन के निम्न कारण है।

1. प्रतिकूल धरातलीय स्वरूप
2. पानी की कमी
3. उर्जा के साधनों की कमी
4. औद्योगिक कच्चे माल की सीमित उपलब्धता
5. तकनीकि ज्ञान की कमी
6. सीमित पूंजी निवेश
7. विरासत में मिला औद्योगिक पिछडापन
8. प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी
9. सीमित बाजार एवं ढांचागत सुविधाओं की कमी
10. कच्चे माल की कमी
11. परिवहन साधनों की कमी
12. राजनीतिक हस्तक्षेप

## राजस्थान के प्रमुख उद्योग

### सूती वस्त्र उद्योग

#### सबसे प्राचीन व परम्परागत उद्योग

राज्य मे प्रथम सूती कपडा मील 1889 में दी कृष्णा मिल्स लिमिटेड के नाम से ब्यावर में स्थापित हुई थी । इसके पश्चात 1906 और 1925 में यहां दो और मील स्थापित हुई ।

1938 में भीलवाडा, 1942 में पाली, 1946 में गंगानगर सूती वस्त्र की मीलें स्थापित हुई ।

भीलवाडा को राजस्थान का मैनचेस्टर कहा जाता है । 2009 में केन्द्र सरकार ने इसे वस्त्र निर्यात नगर का दर्जा दिया।

- एकीकरण पूर्ण होने के समय राजस्थान में 7 सूती वस्त्र की मिलें थी।
- वर्तमान में 23 सूती वस्त्र की मिलें है।
  निजी – 17
  i. विजयकोटन मिल – विजयनगर
  ii. एडवर्ड मिल – ब्यावर
  iii. महालक्ष्मी मिल – ब्यावर

सहकारी मिलें – 3

i. श्री गंगानगर सहकारी कताई मिल – हनुमानगढ (1981)
ii. गुलाबपुरा – भीलवाडा
iii. गंगापुर सहकारी कताई मिल – भीलवाडा

स्पिनफेड – तीनों सहकारी मिलों को मिलाकर 1993 में बनाया गया ।

राजस्थान में प्रमुख सूती वस्त्र उद्योग के निम्न कारखाने है ।

| | |
|---|---|
| एडवर्ड मिल्स | – ब्यावर |
| कृष्णा मिल्स | – ब्यावर |
| महालक्ष्मी मिल्स | – ब्यावर |
| आदित्य मिल्स | – किशनगढ |
| महाराजा श्री उम्मेद मिल्स | – पाली |
| मेवाड टैक्सटाइल्स | – भीलवाडा |
| राजस्थान स्पिनिंग एवं विविंग मिल्स | – गुलाबपुरा |
| मॉडर्न ग्रुप | – भीलवाडा |
| भीलवाडा सूटिंग-शर्टिंग | – भीलवडा |
| राजस्थान टैक्सटाइल्स | – भवनी मण्डी |
| रिलाइन्स कोमेटैक्स | – उदयपुर |
| विजयनगर कॉटन मिल्स | – विजयनगर |
| डे.सी.टी. | – श्री गंगानगर |
| उदयपुर कॉटन मिल्स | – उदयपुर |
| जयपुर स्पिनिंग एवं वीविंग मिल्स | – जयपुर |
| राजस्थान को-ऑपरेटिव मिल्स | – गुलाबपुरा |
| श्री गोपाल इण्डस्ट्रीज | – कोटा |

**सूती वस्त्र उद्योग के विकास एवं स्थायीकरण के कारक एवं समस्याएँ –**

1 कच्चा माल अर्थात् कपास की उपलब्धता।
2 अनुकूल जलवायु अर्थात् नम जलवायु।
3 पानी की उपलब्धता।
4 शक्ति के साधन।
5 सस्ते श्रमिक।
6 बाजार की समीपता।
7 पूँजी
8 नवीन मशीनों का अभाव।

**(1) कच्चा माल** – राजस्थान के प्रमुख उत्पादक जिले गंगानगर व हनुमानगढ़ है। जिनसे लगभग 65 प्रतिशत कपास प्राप्त होती है। गंगानगर में कपड़ा मिल के अलावा जीनिंग मिलें हैं। राज्य के भीलवाड़ा एवं अजमेर जिलों में ज्यादातर सूती वस्त्र मिलों का केन्द्रीयकरण हुआ है। जिसका महत्वपूर्ण कारण इन क्षेत्रों में कच्चे माल की उपलब्धता है।

**(2) जलवायु –** राजस्थान की जलवायु शुष्क एवं अर्द्धशुष्क होने के कारण सूती वस्त्र उद्योग के लिए उपयुक्त नहीं है।

**(3) पानी की उपलब्धता –** सूती वस्त्र उद्योग में अपेक्षाकृत अधिक पानी की जरूरत होती है। राजस्थान में पानी की कमी है तथा कभी – कभी अकाल भी पड़ते रहते है। जिसके कारण भू – जल भी गहरा होता जा रहा है। पानी की पर्याप्तता न होना सूती वस्त्र उद्योग के विकास में बाधक है।

**(4) शक्ति के साधन –** राजस्थान में बिजली आपूर्ती कम है जिसके कारण उद्योगों को पर्याप्त मात्रा में बिजली

आपूर्ति नही हो पाती है जिसका प्रभाव उत्पादन पर पड़ता है।

**(5) श्रमिक –** राजस्थान में पर्याप्त मात्रा में श्रमिक उपलब्ध हैं, किन्तु वे कुशल नहीं हैं। वर्तमान में आधुनिक मशीनों का उपयोग अधिक हो रहा है। इस वजह से श्रमिकों की कम आवश्यकता पड़ती है।

**(6) बाजार –** उत्पादित सूती वस्त्र के लिए बाजार समस्या नही है। क्योंकि स्थानीय खपत पर्याप्त है। बाजार में प्रमुख समस्या सिंथेटिक कपड़ों से प्रतियोगिता है, जो सस्ते एवं टिकाऊ होते हैं।

**(7) पूँजी –** पूँजी निवेश राजस्थान में अपेक्षाकृत कम है।

## ऊन उद्योग

राजस्थान सर्वाधिक ऊन उत्पादन करने वाला राज्य है। जो सम्पूर्ण देश का 40 प्रतिशत है। राज्य में ऊन उद्योग निम्न है।

1. स्टेट वूल मिल्स – बीकानेर
2. जोधपुर ऊन फैक्ट्री
3. विदेशी आयात-निर्यात संस्था कोटा
4. वर्स्टेड स्पिनिंग मील चुरू
5. वर्स्टेड स्पिनिंग मील लाडनूं
6. वूल टेस्टिंग प्रयोगशाला – बीकानेर
7. विदेशी ऊन आयात-निर्यात केन्द्र – कोटा

## सीमेंट उद्योग

राज्य में सीमेंट उद्योग उन्नत अवस्था में है। इसके विकास की असीम संभावना भी है। क्योंकि राज्य में कच्चे माल चूने पत्थर की प्रचुर उपलब्धता है। वर्तमान में राज्य भारत का दूसरा प्रमुख सीमेंट उत्पादक राज्य है।

राज्य में प्रथम सीमेंट कारखाना 1915 में लाखेरी (बूंदी) में स्थापित किया गया। A.C.C. सीमेंट कंपनी द्वारा उत्पादन 1917 में प्रारंभ किया।

- जयपुर उद्योग लिमिटेड – 1953 में सवाईमाधोपुर
- J.K. White सीमेंट कारखाना – 1984 में गोटन (नागौर)
- इण्डियन रेयान इंडस्ट्रीज लिमिटेड बिडला White सीमेंट – 1988 खारियाखगार (जोधपुर)

राजस्थान के सीमेंट के बडे कारखाने निम्नलिखित है –

| क्र.स | सीमेंट इकाई | स्थान/जिला |
|---|---|---|
| 1. | ए.सी.सी.लिमिटेड | लाखेरी (बूंदी) |
| 2. | चित्तौडगढ सीमेंट वर्क्स | चित्तौडगढ |
| 3. | अम्बूजा सीमेंट | खरियावास (पाली) |
| 4. | डे.के. सीमेंट एवं वंडर सीमेंट | निम्बाहेडा (चित्तौडगढ) |
| 5. | मंगलम सीमेंट | मोडक (कोटा) |
| 6. | डे.के. लक्ष्मी सीमेंट | सिरोही |
| 7. | श्री सीमेंट | ब्यावर (अजमेर) |
| 8. | श्री राम सीमेंट | कोटा |
| 9. | बिडला व्हाइट सीमेंट | गोटन |
| 10. | हिन्दुस्तान सीमेंट | उदयपुर |
| 11. | राज श्री सीमेंट | खारिया, मीठापुर (नागौर) |
| 12. | इण्डिया सीमेंट लि. | नौखिया (बांसवाडा) |
| 13. | अल्ट्राटेक सीमेंट | सवा. शम्भूपुरा रोड (चित्तौडगढ) |
| 14. | बिडला कार्पोरेशन | चचेरिया (चित्तौडगढ) |
| 15. | बिनानी सीमेंट | सिरोही (सीकर) |

डे.के. सीमेंड निम्बाहेडा सर्वाधिक क्षमता वाला कारखाना है जबकि श्री राम सीमेंट कोटा न्यूनतम क्षमता वाला कारखाना है।

- जयपुर उद्योग लिमिटेड – 1953 सवाई माधोपुर
- एशिया का बडा सीमेंट कारखाना

### सीमेंट उद्योग के स्थानीयकरण के कारण

1. **कच्चा माल –** सीमेंट में कच्चे माल के रूप में चूना, खड़िया, जिप्सम का उपयोग होता है। राजस्थान में यह कच्चा माल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इसी कारण यहाँ सीमेंट उद्योग का विकास हुआ। न केवल वृहत् कारखानें अपितु मिनी सीमेंट प्लांट की अधिक संख्या में होना स्थानीय कच्चे माल की उपलब्धता दर्शाता है।
2. **ऊर्जा के साधन –** सीमेंट कारखानों में ऊर्जा के स्रोत के रूप में कोयले का उपयोग किया जाता है। राज्य में कोयला उपलब्ध न होने के कारण बिहार और झारखण्ड से आयात किया जाता है।
3. **श्रमिक –** राज्य में सस्ते श्रमिक उपलब्ध हैं, जिन्हें सीमेंट कारखानों में लगाया जाता है। राज्य के बाहर यू.पी.,बिहार से भी श्रमिक यहाँ आते हैं।
4. **पूँजी –** निजी उद्योगपतियों ने इस उद्योग में पूँजी लगाई है। साथ ही सरकारी प्रोत्साहन एवं ऋण सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
5. **परिवहन –** उत्पादित सीमेंट को उपभोग स्थलों तक रेल एवं सड़क मार्गों द्वारा पहुँचाया जाता है। परिवहन सुविधा सामान्य है।

6. **बाजार** – वर्तमान में सीमेंट की अत्यधिक माँग है। राज्य में और राज्य से बाहर सीमेंट का पर्याप्त बाजार है।
7. **सरकारी संरक्षण** – सरकार की नीति सीमेंट उद्योग को प्रोत्साहन देने की रही है। उद्योग के लिए न केवल भूमि अपितु अन्य सुविधाएँ भी सरकार द्वारा प्रदान की जाती है।

उपर्युक्त प्रोत्साहन कारकों के होते हुए भी सीमेंट उद्योग को वर्तमान में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, इनमें प्रमुख हैं–

(i) कोयला आपूर्ति की समस्या
(ii) बिजली की अपर्याप्त प्राप्ति
(iii) पूँजी की कमी
(iv) अधिक उत्पादन लागत
(v) बड़े एवं मिनी उद्योगों में प्रतिस्पर्द्धा
(vi) सीमेंट के मूल्य एवं वितरण की नीति में सरकारी दृष्टि परिवर्तन उपर्युक्त समस्याओं के उपरान्त भी राज्य में सीमेंट उद्योग का भविष्य उज्ज्वल है।

## ताँबा उद्योग (Copper Industry)

**राजस्थान में ताँबा उद्योग का विशेष महत्त्व है।**

हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड भारत सरकार का उपक्रम है, जो झुन्झुनूँ जिले के खेतड़ी गाँव के निकट स्थापित है। इस ताँबा शोधक संयंत्र की स्थापना 1967 में की गई। इसके अन्तर्गत राज्य में तीन परियोजनाएँ कार्यरत हैं–

1. खेतड़ी कॉपर कॉम्पलेक्स, खेतड़ी नगर झुँझुनूँ
2. दरीबा ताम्र परियोजना, अलवर और
3. चाँदमारी ताम्र परियोजना, झुँझुनूँ

खेतड़ी कॉपर कॉम्पलेक्स देश की सबसे बड़ी ताम्र खनन एवं शोधक इकाई है। इसकी प्रतिवर्ष 31 हजार टन ताँबा उत्पादन की क्षमता है। इसमें वृद्धि कर 1992–93 में 45 हजार टन प्रतिवर्ष कर दिया गया है। इसकी सह इकाइयों में एक सुपर फॉस्फेट का कारखाना और 600 टन प्रतिवर्ष उत्पादन करने वाला सल्फ्यूरिक एसिड तैयार करने वाला प्लांट है। राज्य में ताँबा के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

## जस्ता उद्योग (Zinc Industry)

*राजस्थान में जस्ता उद्योग अति प्राचीन है। यहां हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड जस्ता खनन करता है। यह उदयपुर के पास देबारी में 10 जनवरी 1996 में स्थापित किया गया था।*

*हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड की एक परियोजना रामपुरा अगुचा (भीलवाडा) में स्थापित किया गया है।*

*जस्ता प्रदावन कारखाने हिंदुस्ताान जिंक लिमिटेड ने चंदेरिया (चित्तौडगढ) में तथा देबारी में स्थापित किये गये है।*

- राजस्थान में जस्ता उद्योग काफी प्राचीन है, जिसके प्रमाण छठी शताब्दी से ही मिलते हैं। यह उद्योग स्थानीय स्तर पर था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के प''चात् आधुनिक जस्ता उद्योग का प्रारम्भ जिंक स्मेल्टर की स्थापना के साथ ही हुआ है, जो भारत सरकार का औद्योगिक उपक्रम 'हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड' है। यद्यपि वर्ष 2005 में इसे निजी हाथों में सौप दिया गया है।
- हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड उदयपुर के निकट देबारी में स्थित है। यहाँ प्रचुर मात्रा में जस्ता उपलब्ध है। यहाँ सर्वप्रथम 10 जनवरी, 1996 को 'हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड' के नाम से एक जस्ता गलाने का संयंत्र लगाया गया, जिसमें जावर माइन्स से निकले जस्ते को शुद्ध किया जाता था। इसी प्रक्रिया को पूर्ण स्वरूप देने हेतु जस्ता परिद्रावक संयंत्र स्थापित किया गया। इस संयंत्र से न केवल जस्ता अपितु कैडमियम, चाँदी, सिंगल सुपर फॉस्फेट और गंधक का तेजाब भी तैयार किया जाता है। वर्ष 2001 में एक लाख मैट्रिक टन से अधिक जस्ता, 193 मैट्रिक टन कैडमियम का उत्पादन हुआ, मगर सुपर फॉस्फेट का उत्पादन बन्द रहा।

  हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड की एक नई परियोजना भीलवाड़ा जिले में रामपुरा–अगूचा में स्थापित की गई है, जिसकी क्षमता तीन हजार टन प्रतिदिन है। चित्तौड़गढ़ जिले में चन्देरिया सीसा–जस्ता प्रद्रावक स्थापित किया गया है, जिसकी वार्षिक क्षमता 70 हजार टन जस्ता और 35 हजार टन सीसे की है।

विगत वर्षों में राज्य में जस्ता उत्पादों के उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

1. **कच्चा माल** – देबारी और चन्देरिया के जस्ता प्रद्रावण कारखानों में जस्ता सान्द्रण से प्रद्रावण प्रक्रिया (Smelting Process) के द्वारा लगभग 54 प्रतिशत

# राजस्थान के लोक नाट्य

## ख्याल

- ऐतिहासिक एवं पौराणिक कहानियों पर संगीत के माध्यम से अभिनय किया जाता है।
- ख्याल के सूत्रधार को "हलकारा" कहा जाता है।
- मनरंग को ख्याल गायिकी का प्रवर्तक माना जाता है।

## 1. कुचामनी ख्याल

- केवल पुरूष भाग लेते हैं।
- संस्थापक : "लच्छीराम" (10 ख्यालों की रचना)

### प्रवर्तक

- मुख्य कलाकार : उगमराज
- मुख्य कहानियाँ – मीरा मंगल
  राव रिडमल
  चाँद नील गिरी

## 2. जयपुरी ख्याल

- इस ख्याल में महिलाऐ भी भाग लेती हैं।
- इसमें नये प्रयोग करने की सम्भावना होती हैं।
- कलाकार – हमीदुल्ला (ख्याल भारमली)

## 3. अलीबख्शी ख्याल

- ये ख्याल "मुंडावर (अलवर)" के नवाब अली बख्श के समय शुरू हुई थी।
- अली बख्श को अलवर का रसखान कहा जाता है।
- कृष्ण लीला, निहालदे, चन्द्रावत, गुलकावती आदि।

## 4. शेखावाटी ख्याल/चिडावी ख्याल

प्रवर्तक : नानूराम जी
मुख्य कलाकार : "दुलिया राणा" (चिडावा)
ख्याल – हीर-रांझा, जयदेव, भृर्तहरि, आल्हादेव

## 5. हैला ख्याल

(जोर-जोर से बोल के)

- मुख्य क्षेत्र : लालसोट (दौसा)
- सवाई माधोपुर – प्रारंभ होने से पूर्व
- मुख्य वाद्य यंत्र – "नौबत"
- बम वाद्य यंत्र का प्रयोग

## 6. ढप्पाली ख्याल

- मुख्य वाद्य यंत्र : डफ (चंग)
- मुख्य क्षेत्र : भरतपुर, अलवर के लक्ष्मणगढ में

## 7. कन्हैया ख्याल

- प्रमुख क्षेत्र : करौली
- इसमें सुत्रधार – "मेडिया" कहते हैं।
- वाद्य यंत्र – नौबत, घेरा, मंजीरा व ढोलक

### भेंट के दंगल:

मुख्य क्षेत्र – बाडी, बसेडी (धौलपुर)

## 8. तुर्रा कलंगी

प्रवर्तक : तुकनगीर, शाहअली

- चंदेरी के राजा (मेदिनीराय) ने इनके अभिनय से खुश होकर इन्हे तुर्रा, कलंगी भेंट दिये थें।
- सहेदू सिंह, हमीद बेग ने इसे चित्तौड में लोकप्रिय किया।
- इसमें 2 पक्ष आपस संवाद करते है जिसे "गम्मत" कहा जाता है।

2 पक्ष
1. शिव पक्ष
2. पार्वती पक्ष

- शिव पक्ष के झण्डे का रंग भगवा तथा पार्वती पक्ष के झण्डे का रंग "हरा" होता हैं।
- एकमात्र लोकनाट्य जिसमें मंच की सजावट की जाती है।
- एकमात्र लोकनाट्य जिसमें दर्शक भी भाग लेते हैं।

### मुख्य कलाकार

- चेतराम
- ओंकार सिंह
- जयदयाल सोनी

### मुख्य केन्द्र

- घोसुण्डा → चित्तौडगढ
- निम्बाहेडा → चित्तौडगढ

## नौटंकी

- भरतपुर में लोकप्रिय हैं।
- प्रचलन – डींग निवासी भूरीलाल ने किया।
- "हाथरस शैली" से प्रभावित हैं।

- इनमें 9 प्रकार के वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है । महिला तथा पुरूष दोनों भाग लेते हैं ।
- प्रवर्तक :भूरीलाल जी,
- मुख्य कलाकार : गिरिराज प्रसाद
- मुख्य कहानियाँ :
  1. अमर सिंह राठौड
  2. आल्हा - ऊदल
  3. सत्यवान - सावित्री
  4. लैला-मंजनू

## रम्मत

- जैसलमेर व बीकानेर क्षेत्र में लोकप्रिय है ।
- होली के समय ''फाल्गुन शुक्ल अष्टमी'' से लेकर चतुर्दशी तक रम्मत लोकनाट्य किया जाता है ।
- मुख्य वाद्य यंत्र नगाडा तथा ढोलक है ।
- रम्मत मे रंगमंचीय सजावट नहीं होती है ।
- रम्मत शुरू करने से पहले ''रामदेवजी का भजन'' गाते है ।
- रम्मत का अर्थ-रमने वाला अर्थात् खेल होता है ।
- जैसलमेर में इसे ''तेज कवि'' ने लोकप्रिय किया । इसने ''स्वतंत्र बावनी'' की रचना की तथा इसे गांधीजी को भेंट किया । रम्मत के मुख्य कलाकार तेरिये होते है ।
- तेज कवि ने अपने नाटकों में अंग्रेजी नीतियों का विरोध किया
- बीकानेर में ''पुष्करणा ब्राह्मणों'' द्वारा रम्मत का आयोजन पाटो पर किया जाता है ।
- आचार्यो का चौक - अमरसिंह राठौड की रम्मत
- बारह गुवाड - हेडाउ - मेरी की रम्मत (इसे जवाहर लाल जी ने प्रारम्भ किया था)
- बीकानेर में रम्मत के मुख्य कलाकार:
  1. फागु महाराज
  2. तुआ महाराज
  3. मनीराम व्यास
  4. तुलसी दास

## तमाशा

- मूल रूप से महाराष्ट्र का लोकनाट्य है ।
- ''सवाई प्रताप सिंह'' के समय जयपुर में लोकप्रिय हुआ ।
- इसके लिए ''बंशीधर भट्ट'' को महाराष्ट्र से लेकर आये ।
- जिस खुले मैदान में तमाशा का आयोजन होता है उसे ''अखाडा'' कहा जाता है ।
- जयपुर की प्रसिद्ध नृत्यांगना ''गौहर जान'' तमाशा में भाग लेती थी ।
- वाद्य यंत्र - हारमोनियम, तबला, सारंगी, नक्कारा

## मुख्य कहानियाँ

1. जुठ्ठन मियां का तमाशा (शीतला अष्टमी)
2. जोगी - जोगण का तमाशा

मुख्य कलाकार : गोपी कृष्ण जी भट्ट - तमाशा के उस्ताद
संगीत प्रभाकर की उपाधि

## गवरी

- राजस्थान का सबसे प्राचीन लोकनाट्य इसे ''भेरू लोकनाट्य'' भी कहते है ।
- यह मेवाड के भीलों का धार्मिक लोकनाट्य है जो रक्षाबन्धन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है ।
- इसमें केवल पुरूष भाग लेते है ।
- सम्पूर्ण भारत मे दिन में प्रदर्शित होने वाला भीलों का एकमात्र लोकनाट्य ।

### मुख्य वाद्य यंत्र

1. मॉदल
2. थाली

- यह लोकनाट्य ''शिव-भस्मासुर'' की कहानी पर आधारित है । इसमें शिव को ''राई बुडिया'' तथा पार्वती को 'गवरी' कहा जाता है ।
- इसका सूत्रधार ''कुटकुडिया'' कहलाता है ।
- हास्य कलाकार ''झटपटिया'' कहलाता है ।

### मुख्य कहानियाँ

1. कान-गुजरी
2. बन्जारा - बन्जारी
3. अकबर - बीरबल

अलग अलग कहानियों को जोडने के लिए बीच में नृत्य किया जाता है, जिसे ''गवरी की घाई'' कहते है ।

## स्वांग

- ऐतिहासिक एवं पौराणिक पात्रों के कपडे पहनकर उनका अभिनय करना स्वांग कहलाता है ।
- इसके कलाकार को ''बहुरूपिया'' कहा जाता है ।
- भीलवाडा में लोकप्रिय है ।
- होली के अवसर पर किया जाता है ।

## मुख्य कलाकार

1. परशुराम
2. जानकी लाल भांड (चिडावा) इनको मंकी मेन भी कहा जाता है ।

माण्डल में (भीलवाडा) ''चैत्र कृष्ण त्रयोदशी'' को ''नाहरों का स्वांग'' किया जाता है ।

## चारबैत

- मूल रूप से अफगानिस्तान का लोकनाट्य है ।
- पहले यह ''पश्तो भाषा'' में प्रस्तुत किया जाता था ।
- राजस्थान के टोंक क्षेत्र में लोकप्रिय है ।
- ''नवाब फैंज़ुल्ला खाँ (टोंक)'' के समय करीम खाँ ने इसे स्थानीय भाषा में प्रस्तुत किया था ।
  मुख्य वाद्य यंत्र – डफ
  उपनाम – नवाबों की विद्या

## भवाई

- ''उदयपुर संभाग'' की भवाई जाति का लोकनाट्य
- इसमें मुख्य महिला (सगीजी) व पुरूष(सगाजी) कहा जाता है ।
- इसमें कलाकार मंच पर आकर अपना परिचय नहीं देते ।
- ''शान्ता गाँधी'' के नाटक ''जसमल ओडण'' पर भवाई लोकनाट्य किया जाता है जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है ।

मुख्य कलाकार : बाघजी (केकडी)

- यह एक व्यावसायिक लोकनाट्य है ।
- ओड जनजाति तालाब खोदने का काम करती थी ।

## रामलीला

- इसे तुलसीदास जी द्वारा शुरू किया गया था ।
- बिसाऊ (झुन्झुनु) में ''मूक रामलीला'' होती है ।
- ''अटरू'' (बारां) में धनुष को भगवान राम नहीं तोडते बल्कि जनता द्वारा तोडा जाता है ।
- भरतपुर में वेंकटेश रामलीला होती है ।
- मांगरौल (बारां) की रामलीला ढाई कडी की है ।

## रासलीला

- वल्लभाचार्य जी द्वारा प्रारम्भ किया गया था ।
  मुख्य केन्द्रः कामां (भरतपुर) फूलेरा (जयपुर)
- ब्रज की राई जाति व्यवसायिक रूप से करती है ।

## रामकादिक लीला

मुख्य केन्द्र :

1. घोसुण्डा (चित्तौड)–आश्विन में
2. बस्सी(चित्तौड) कार्तिक में

## गौर लीलाः

- आबू क्षेत्र की ''गरासिया जनजाति'' द्वारा
- चैत्र शुक्ल तृतीया पर गरासिये गोर लीला करते है ।

# राजस्थान की जनजातियाँ

राजस्थान का जनजातियों की जनसंख्या की दृष्टि से भारत में 6 वां स्थान है ।
प्रथम – एम.पी
द्वितीय – महाराष्ट्र
तृतीय – उडीसा
चतुर्थ – बिहार
पंचम – गुजरात

राजस्थान में :–

- जनजातियों की सर्वाधिक जनसंख्या – उदयपुर
- जनजातियों का सर्वाधिक प्रतिशत – बाँसवाडा
- जनजातियों की न्यूनतम प्रतिशत – नागौर
- जनजातियों की न्यूनतम जनसंख्या–बीकानेर

## 1. कंजर

- कंजर शब्द ''काननचर'' से उत्पन्न हुआ है ।
- कंजर जनजाति अधिकतर ''हाडौती क्षेत्र'' में निवास करती है ।
- 1974 में चाँचेडा रशीद अहमद पहाडी द्वारा प्रसिद्धि दिलायी ।
- इनके मुखिया का पटेल कहा जाता है ।
- इनके घरों के पीछे खिडकियां अनिवार्य होती है ।
- मोर का मांस इन्हे प्रिय है ।
- आराध्य देवता – हनुमान जी
- आराध्य देवी – चौथ माता
- शव का दफनाते है ।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुंह में शराब डाली जाती है ।
- महिलाएं चकरी नृत्य करती है ।
- नृत्य के समय जो पायजामा पहनती है उसे ''खुशनी'' कहा जाता है ।
- कंजर जनजाति का मुख्य व्यवसाय चोरी करना
- चोरी करने से पहले देवताओं से आर्शीवाद लेते है । इसे ''पाती माँगना'' कहते है ।
- हाकम राजा का प्याला पीकर कंजर कवि झूठ नही बोलते ।

### मुख्य देवता

1. 'जोगणिया माता'– ''कंजरो की कुलदेवी''
2. चौथ माता
3. रक्तदंडी माता
4. हनुमान जी

## 2. कथौडी

- मूल रूप से महाराष्ट्र की जनजाति है ।
- राजस्थान के उदयपुर जिले में अधिक निवास करती है ।
- ये लोग खैर के पेड से कत्था प्राप्त करते थे इसलिए इन्हें कथौडी कहा जाता है ।
- ये शव को दफनाते है ।
- कथौडी दूध नहीं पीते ये शराब अधिक पीते है ।
- महिलाये भी साथ में शराब पीती है ।
- ये लोग ''बंदर का माँस'' खाते है ।
- महिलाएँ गहने नहीं पहनती है लेकिन ''गोंदना'' बनवाती है ।
- कथौडी महिलाओं द्वारा पहनी जाने वाली साडी ''फडका'' कहलाती है ।
- इनके घरों को खोलरा कहा जाता है ।
- पुरूषों द्वारा मावलिया एवं लावणी नृत्य किया जाता है ।
- दल का नेता 'नायक' कहलाता है ।
- महिलाऐं होली पर होली नृत्य करती है ।
- कथौडी एक संकटग्रस्त (विलुप्तप्राय) जनजाति है जिनके केवल 35-40 परिवार ही बचे है ।
- राजस्थान सरकार इन्हें मनरेगा में 200 दिन का अतिरिक्त रोजगार देती है ।

इनका मुखिया : ''नायक''
मुख्य देवता:

1. डूँगरदेव
2. वाघ देव
3. गम देव
4. भारी माता
5. कंसारी माता

## 3. डामोर : (डूँगरपुर)

- डूंगरपुर, बांसवाडा और उदयपुर में निवास करती है ।
- एकमात्र जनजाति जो वनों पर आश्रित नहीं है । खेती तथा पशुपालन करते है ।
- अपनी उत्पति राजपूतों से मानते है ।
- इनके मुखिया को ''मुखी'' कहा जाता है ।
- गांव को ''फलां'' कहा जाता है ।
- डूँगरपुर जिले में अधिकतर जनसंख्या निवास करती है ।
- सीमलवाडा पंचायत समिति (डूँगरपुर) को डामरिया क्षेत्र कहा जाता है ।
- डामोर पुरूष एक से अधिक विवाह (बहुविवाह) करते है ।
- वधू मूल्य को ''दापा'' कहा जाता है । (शादी के ऐवज में)
- डामोर पुरूष भी महिलाओं की भाँति गहने पहनते है ।
- डामोर जनजाति की भाषा पर गुजराती भाषा का प्रभाव पडता है ।
- होली के समय ''चाडिया कार्यक्रम'' किया जाता है ।

### डामोर जनजाति के मेले :

1. छैला बावजी का मेला - पंचमहल (गुजरात)
2. म्यारस की रेवडी का मेला - डूँगरपुर

- मुखिया को ''मुखी'' कहा जाता है ।

### आर्थिक संगठन

- गुजरात से ही डामोर आदिवासी खेती करते आये है । राजस्थान में बसने वाले डूँगरपुर के डामोरों के पास कृषि योग्य भूमि बहुत थोडी है । एक परिवार के पास औसतन 3-4 बीघा से अधिक जमीन नहीं है । यदि वर्षा हुई तो वे वर्ष में दो फसलें ले लेते है । खरीफ की फसल में ये आदिवासी मक्का और दालें पैदा करते है । कहीं-कहीं मूँगफली की फसल भी ली जाती है। रबी की फसल में मुख्यतः चना लिए जाते है । नगद फसल लेने का रिवाज अभी में नहीं चला। पिछले चार दशकों के विकास कार्यक्रमों के चलने के परिणामस्वरूप डामोर आदिवासी में आधुनिक कृषि के प्रति जागृति आयी है । वे रासायनिक खाद, सुधरे हुए बीज, कीटनाशक दवाइयों आदि का प्रयोग करने लगे है, उनकी सबसे बडी कठिनाई छोटी जाति का होना तथा साख का अभाव है । जिस संभाग में वे रहते है, वहाँ की भूमि उपजाऊ नहीं है । कुएँ के बिना सिंचाई नहीं हो सकती। कुओं का पानी भी बहुत गहरा है । अतः कृषि में जल के लिए ये लोग पूर्णतः वर्षा पर निर्भर है । ऐसी अवस्था में डामोर की कृषि अर्थव्यवस्था एक किताबी अर्थव्यवस्था की तरह ही है । जीविकोपार्जन के लिए उन्हें दिहाडी पर काम करना पडता है । इस जनजाति के जवानों को डूँगरपुर शहर तथा सागवाडा कस्बे में मजदूरी करते हुए देखा जा सकता है । कुछ डामोर तो अहमदाबाद और वडोदरा में मजदूरी के लिए जाते है ।
- डामोर अर्थव्यवस्था की बहुत बडी त्रासदी यह है कि उनमें शिक्षा का प्रसार नहीं हुआ । पढे-लिखे लोग बहुत थोडे है । इसका परिणाम यह हुआ कि लोग सरकारी नौकरी में आरक्षण के होते हुए भी प्रवेश नहीं कर पाते है । शिक्षा और प्रशिक्षण के अभाव में वे

अपनी अर्थव्यवस्था को अन्य आदिवासियों की तरह अनेकता नहीं दे पाए, अतः आर्थिक दृष्टि से डामोर आदिवासी उपयोजन क्षेत्र में होते हुए भी विपन्नावस्था में है ।

## 4. सांसी

- उत्पति सांसमल से मानी जाती है ।
- सबसे अधिक जनसंख्या भरतपुर और झुंझुनू जिले में है ।
- एकमात्र जनजाति जो विधवा विवाह नहीं करती ।
- सांसी जनजाति में 2 उपजाति होती है ।
  1. बीजा
  2. माला
- "भाखर बावजी" की कसम खाकर झूठ नहीं बोलते ।
- कूकडी रस्म : विवाह से पहले लडकी के चरित्र की परीक्षा लेते है ।
- सिकोदरी माता इनकी आराध्य देवी है ।

**अर्थव्यवस्था** – सांसी जनजाति के सदस्य घुमंतू जीवन व्यतीत करते है । वे जंगली जानवरों का शिकार करते है । इसके अतिरिक्त कुछ हस्तशिल्प और कृषि व्यवसाय का भी कार्य करते है ।

## 5. गरासिया

सिरोही के आबू, पिण्डवाडा
पाली के बाली → क्षेत्र में अधिक निवास करती है ।

- उदयपुर के गोगुन्दा
- घर घेर कहलाते है ।
- बिखरे गांव पाल कहलाते है ।
- एक ही गांव के फालिया कहलाते है ।
- नक्की झील इनका पवित्र स्थान है यहाँ अस्थियों का विसर्जन करते है ।
- होली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को 'चडिया' कहते है ।
- मृत्यु के 12 वें दिन दाह संस्कार करते है ।
- सफेद पशु व मोर को भी पवित्र मानते है ।

इनमें 3 प्रकार की पंचायत होती है ।
1. मोती न्यात "बाबोर हाड्या" कहलाते है ।
2. नेनकी न्यात "माडेरिया"
3. निचली न्यात

- इनमें प्रेम विवाह अधिक होते है । सियावा (सिरोही) गाँव के गणगौर मेले में
- झेला बावसी का मेला, ग्यारसी की खाडी का मेला

### विवाह के प्रकार

1. मोर बंधिया
2. ताणना (पैसे देकर लाना)
3. पहरावणा (कपडो के बदले)
4. मेलवो (मुकलावा करना)
5. खेवणो (शादी शुदा महिला अपने प्रेमीके साथ शादी करें)
6. सेवा

खेवणों : माला विवाह भी कहते है ।
सेवा : घर जवाई बनवाकर (शादी से पहले) काम करवाते है ।
गरासिया महिलाएँ सुन्दर तथा श्रृंगार प्रिय होती है ।
कुंआरी लडकिया लाख का चूडा पहनती है ।
शादी शुदा हाथी दांत का चूडा पहनती है ।
गरासिया पुरूष + भील महिला – भील गरासिया
गरासिया महिला +भील पुरूष – गमेती गरासिया
मुखिया : सहलोत / पालवी
गरासिया जनजाति की सहकारी संस्था –हेलरू
मृतक का स्मारक – हूरे इनकी स्थापना कार्तिक पूर्णिमा को की जाती है ।

- अनाज की कोठियां सोहरा कहलाती है ।
- मृत्यु भोज कांदिया, मेक या मेह ।
- सामूहिक कृषि थावरी या हारी कहलाई जाती है ।
- इनकी शगुन चीडी डुबकी है जिसकी मकर संक्रांति पर पूजा की जाती है ।

### मेले :

1. कोटेश्वर मेला – अम्बाजी(गुजरात)
2. चेतर – विचितर मेला – देलवाडा (सिरोही)

**गरासियों का आर्थिक तंत्र** – यद्यपि गरासिया लोग वनों में रहते है । वन ही उनके जीवन का मुख्य अंग एवं आधार है । फिर भी 85 प्रतिशत गरासिया कृषि कार्य में लगे हुये है । यह मक्का पैदा करते है । कभी-कभी पानी मिलने पर गेहूँ, जौ भी पैदा कर लेते है । गरासिया के यहाँ एक ही फसल होती है । वर्ष के अन्य भागों में लकडी काटना, मजदूरी करना, ढोर चराना, शिकार आदि कार्य करते है । भीलों की तुलना में गरासिया अधिक सम्पन्न होते है ।

**आर्थिक संगठन** – आजकल सरकार ने गरासियों को शिक्षित करने के लिए स्कूल खोले है । कुछ चिकित्सा सम्बन्धी प्रबन्ध भी किया है । कुछ गरासिया सेना में भर्ती हो गए है । कुछ आबू के पर्यटन केन्द्र होने से पर्यटकों की सेवा में लग गए है तथा सडकों एवं यातायात

के साधनों में भी लग गए हैं। इन पर भी ईसाई पादरी अपना प्रभाव जमाने के लिए सब प्रकार के प्रयत्न कर रहे हैं, जो भविश्य में संकट पैदा करने वाली बात है।

## 6. सहरिया

निवास : किशनगंज, शाहबाद

बारां

- भारत सरकार ने सहरिया जनजाति (राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति) को आदिम जनजाति का दर्जा दिया है।
- राजस्थान सरकार मनरेगा में 100 दिन का अतिरिक्त रोजगार
  (अकाल में = 250 दिन)
- 3 प्रकार की पंचायत :
  पंचताई (पाँच गाँव की पंचायत)
  एकदसिया (11 गाँव की)
  चौरासी (84 गाँव की)
- चौरासी गाँव की पंचायत - वाल्मीकि मन्दिर (सीताबाडी) में
- सहरिया जनजाति वाल्मीकि को अपना आदिपुरूष मानती है।
- सहरिया जनजाति में युगल नृत्य नहीं होता।
- श्राद्ध नहीं करते
- महिलाऐं टैटू बनवाती है लेकिन पुरूष नहीं बनवा सकते
- दहेज प्रथा नहीं है।
- महिलाऐं घर में घूंघट करती है बाहर नहीं करती है।
- कुल देवी - कोडिया माता
- तेजाजी व भैरूजी की भी पूजा करते है।
- लठमार होली खेलते है।
- मकर संक्रांति पर लकडी के डण्डों से लेंगी नामक खेल खेलते है।
- दीपावली पर हीड गाते है।
- वर्षा - ऋतु में आल्हा व लहंगी गाते है।
- मुखियाः कोतवाल
- इनके गाँव को - सहरोल
- छोटी बस्ती को - सहराणा
- हार को - टापरी
- समान रखने की कोठरी को-कुसिला
- गाँव के बीच सामुदायिक केन्द्र होता है। जिसे ढालिया, हथाई, या बंगला कहते है।
- पेडों पर घर बना कर रहते है।
- पेडो पर बने घर को गोपना, टोपा, कोरूआ करते है।
- "धारी संस्कार"(मृतक का) किया जाता है।
- सहरिया महिलाएं गोदना गुदवाती है और पुरूषों मे मना है।
- सहरियों में राय नृत्य प्रसिद्ध है।
- मामूनी संस्था इनके विकास हेतु प्रयास।

### अर्थव्यवस्था

- आर्थिक दृष्टि से सहरिया बडे ही अनुपयुक्त वातावरण में बसे हुए है, जो विकास की दृष्टि से पिछडा हुआ है। समतल भूमि का आभाव होने से सहरिया जहाँ कहीं भी समतल भूमि मिल जाती है, कृषि करते एवं पशु पाल लेते है। खेती में ज्वार मुख्य अनाज है। अन्य फसलें कुओं द्वारा सिचाई करके पैदा करते है। लडका विवाह के पश्चात् अपने परिवार से अलग हो जाता है, लेकिन सारा परिवार एक साथ ही रहता है। परिवार के वृद्ध व्यक्ति का ही सब आदेश मानते है। इनकी जाति में मुख्य पंच को कोतवाल कहते है, जिसका चुनाव होता है। सम्भव हो तो दूसरी फसल से गेहूँ, जौ आदि पैदा कर लिए जाते है। सहरियों का मुख्य भोजन ज्वार ही है। उन्हें पशुओं से दूध, माँस और चमडा मिल जाता है। सहरिया भी भीलों व मीणों की तरह माँसाहारी है। ये लोग बकरे, भेड व सूअर का माँस ही खाते है। गौ माँस इनमें वर्जित है।
- सहरिया आर्थिक दृष्टि से पिछडे हुए है। इनमें से कई लोग बहुत पिछडे हुए है, इनमें से कई लोग मजदूरी करते है, और कर्ज से दबे रहते है। सहरियों की मुख्य सम्पति इनके मकान, कुछ कपडे, छोटा-सा खेत, कुछ औजार व हथियार और कुछ मिट्टी के बर्तन आदि होते है। आजकल सहरिया षहरों में चौकीदारी, बैण्ड बजाना व सडक पर काम करने में लग गये है। कोई-कोई मुर्गी पालन भी करने लग गए है।
- सहरियों के षरीर पर भी भीलों की तरह कपडों का अभाव ही रहता है। उनके मकान भी वनों से प्राप्त लकडी, मिट्टी और कहीं-कहीं पत्थरों से बने छतरीनुमा होते है, जिन्हें सहरिया बंगला कहते है। सहरियों में 45 प्रतिशत लोग ही खेती करते है। पैंतीस प्रतिशत सहरिया अन्य किसानों के खेतों में मजदूरी करते है। इनके अतिरिक्त कुछ लोग वनों और खानें खोदने में लगे रहते है। पशु-पालन केवल संख्या की दृष्टि से ही किया जाता है, न कि आर्थिक सहायता की दृष्टि